पत्रिका

कृषि विश्वविद्यालय में नवाचार

देशी बेर के 200 पौधों पर बडिंग पद्धति से मिलेंगे उन्नत किस्म के फल

पत्रिका
अतुल आचार्य
patrika.com

बीकानेर. स्थानीय देशी बेर के 200 पौधों पर उन्नत किस्म के बेर के पौधे की कलियों को प्रत्यारोपित करने की बडिंग पद्धति से अब बेरी पर गोला, सेब और उमरान किस्म की तरह के बेर मिलेंगे। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय ने ऐसे प्रयोग में बेहतरीन परिणाम प्राप्त किए हैं।

विवि के कृषि वैज्ञानिक स्थानीय बेर की प्रजाति पर बडिंग के माध्यम से बेर की उन्नत किस्में विकसित कर रहे हैं। इसमें तैयार पौधों से स्थानीय किसान बेर के बगीचे लगा सकेंगे। विश्वविद्यालय परिसर में लगे करीब 200 से अधिक देसी बेर के पौधों पर यह प्रयोग चल रहा है। वैज्ञानिकों के अनुसार बेर पश्चिमी राजस्थान में आसानी से लगने वाला पौधा है। इसकी स्थानीय किस्मों पर बडिंग के माध्यम से गोला, सेब, उमरान जैसी उन्नत किस्में तैयार की जा सकेगी। प्रायोगिक तौर पर यह कार्य प्रारंभ किया गया है। विश्वविद्यालय इसके बारे में किसानों को प्रशिक्षण भी देगा।

बडिंग पद्धति का एक पेड़ पर प्रयोग।

वर्षा के पानी का संरक्षण कर बगीचा तैयार

बेर का बगीचा कम खर्चे वाली फसल के रूप में माना जाता है। यहां तक की वर्षा जल का संरक्षण कर भी इसके बगीचे को तैयार किया जा सकता है। इस प्रक्रिया में करीब 1 वर्ष का समय लगेगा। कृषि वैज्ञानिकों का यह नवाचार महत्वपूर्ण साबित हो सकता है।

नवाचार तकनीक के तहत यह कार्य

कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने बताया कि कृषि नवाचार तकनीक के तहत यह कार्य किया जा रहा है। इसका उद्देश्य स्थानीय किसानों के खेत में आमतौर पर आसानी से उगने वाले बेर के पौधों को उन्नत किस्म में बदल कर आय सृजन की दिशा में प्रेरित करना है। कुलसचिव डॉ. देवाराम सैनी ने बताया कि विवि परिसर में देशी बेर के पेड़ों पर यह कार्य किया जाएगा।

यह है प्रकिया

विवि के डॉ. पीके यादव ने बताया कि बडिंग या कलिकायन प्रकिया के तहत कली या बड को मूलवृंत या रूट स्टाक पर लगाया जाता है। दोनों जुड़कर नए गुणों वाले पौधे का निर्माण करते है। इस प्रक्रिया में बडिंग के लिए एक वर्ष या अधिक पुराने रूटस्टाक पर दो नोड के बीच लगभग 75 से 100 सेंटीमीटर की ऊंचाई पर टी के आकार का चीरा लगाकर उन्नत किस्म की वृक्ष की शाखा से शील्ड आकार की ढाई तीन सेंटीमीटर लंबी कली को पॉलिथीन की पट्टी से बांध दिया जाता है। बांधते समय यह ध्यान रखना होता है कि कली का बढ़ने वाला भाग खुला रहे। इससे पौधा उन्नत किस्म का बन कर फसल देता है।